



## PROF. RAMJEE SINGH

Prof. Ramjee Singh is an ex- Member of Parliament (10th Lok Sabha), a former Vice-Chancellor of Jain Vishwa Bharti, Ladnun, Rajasthan and a former Director of Gandhian Studies, Varanasi. He was also mainly responsible for establishing a separate Department of Post Graduate studies and research in Gandhian Thought in India. He was the founder Professor and Head of the Gandhian Thought in Bhagalpur University where he was earlier a Professor of Philosophy. He is widely recognized in India and abroad as an eminent Gandhian thinker as well as a committed social worker in Sarvodaya, Bhoodan, Gramdan and social reform movement led by Acharya Vinoba Bhave and Sri Jay Prakash Narayan.

2. Born on 20th December 1931 in Indrukh, Munger (Bihar), Prof. Singh participated in Quit India Movement in 1942 for which his studies was interrupted. He however passed M A in Philosophy from Patna University (1953) and obtained Ph.D. in Jaina Concept of Omniscience, D.Litt in Hindu thought and another D.Litt. in Gandhian Thought while teaching in various colleges and universities.

3. Prof. Singh has written and edited more than 50 books and presented more than 150 research papers in Philosophy, religion and culture in various conferences in India, Pakistan, Bangladesh, Nepal, Srilanka, Singapore, Thailand, China, Japan, South Korea, USSR, Egypt, South Africa, Kenya, UK, Holland, Fraince, Italy, USA, Canada, etc. He participated in World Parliament of Religions in Chicago (1993) and Capetown (2001). He also participated and led Padyatra and meetings in UK on 125th birth anniversary, and later in Noakhali (Bangla Desh) on the 150th birth anniversary of Mahatma Gandhi.

4. Prof. Singh was deeply involved with relief work under Bihar Relief Committee formed by J.P. during famine in Bihar in 1966-67. He was always active in establishing peace and communal harmony when the situation so demanded in Bihar, particularly in Bhagalpur. He was closely associated with J.P. Movement in 1974 for social change and organized protests against Emergency. He was arrested and detained in Bhagalpur and Hazaribag Jails for 17 months under MISA. Later on, he also worked actively and took up the cause of blinding of prisoners in Bhagalpur jail in the Supreme Court of India.

5. Prof. Singh was the Secretary General of Afro-Asian Philosophical Association, President of All India Philosophy Association and associated in various capacities with Sarva Seva Sangh, Sevagram, Sarvodaya Mandal, Harijan Sevak Sangh, Shanti Sena, Acharya Kul, Federation of University Service Teachers Association when he was jailed for one month during teachers movement.

6. Prof. Singh was honored by numerous Government and Non-Government Organizations and bodies for his academic achievements including an honorary D. Litt by Guru Govind Singh University, Haryana and Lifetime Achievement Award by Indian Council of Philosophical Research. He was also Visitor's (President of India) nominee in J.N.U. and a Professor Emeritus of UGC. He was also honored for his passionate dedication to the cause of poor, downtrodden and women as well as his commitment to the values of freedom movement and democracy by various bodies, Government Organizations including the Prime Minister. He is a true follower of Mahatma Gandhi and tirelessly works to the best of his ability for the realization of Gandhian ideals in thought, speech and action.





## प्रो. रामजी सिंह

प्रो. रामजी सिंह पूर्व संसद सदस्य (10वीं लोक सभा), जैन विश्व भारती, लाडनू, राजस्थान के पूर्व कुलपति और गांधियन स्ट्डीज, वाराणसी के पूर्व निदेशक हैं। भारत में गांधीवादी चिंतन में पोस्ट ग्रेज्युएट स्ट्डीज एवं रिसर्च के पृथक विभाग की स्थापना करने में उनका प्रमुख योगदान था। वह भागलपुर विश्वविद्यालय में गांधीवादी चिंतन के फाउंडर प्रोफेसर एवं प्रमुख रहे जहाँ पहले वे दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर थे। उनको भारत और विदेशों में प्रतिष्ठित गांधीवादी विचारक तथा आचार्य विनोबा भावे और श्री जय प्रकाश नारायण के नेतृत्व में सर्वोदय, भूदान, ग्रामदान और समाज सुधार आंदोलन के लिए भी व्यापक स्तर पर जाना जाता है।

2. 20 दिसम्बर, 1931 को इन्द्रुख, मुंगेर (बिहार) में जन्में प्रों सिंह ने 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया जिससे उनकी पढ़ाई प्रभावित हुई। तथापि, उन्होंने 1953 में पटना विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र में एम. ए. किया और विभिन्न कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में अध्यापन करते हुए जैना कन्सेप्ट ऑफ ऑमनीसाइंस में पीएच. डी, हिंदू चिंतन में डी. लिट और गांधीवादी चिंतन में डी. लिट. की उपाधि प्राप्त की।

3. प्रों सिंह ने 50 से अधिक पुस्तकें लिखी हैं और उनका सम्पादन किया है तथा भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, श्रीलंका, सिंगापुर, थाईलैंड, चीन, जापान, दक्षिणी कोरिया, यूएसएसआर, इजिप्ट, दक्षिणी अफ्रीका, केन्या, यूके, हॉलैंड, फ्रांस, इटली, संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा आदि में हुए विभिन्न सम्मेलनों में दर्शनशास्त्र, धर्म और संस्कृति विषय पर 150 से अधिक शोधपत्र प्रस्तुत किए हैं। उन्होंने 1993 में शिकागो और 2001 में केपटाउन में विश्व धर्म संसद में भाग लिया। उन्होंने महात्मा गांधी की 125वीं जयंती पर यूके तथा बाद में 150वीं जयंती पर नौआखली (बांग्लादेश) में पदयात्रा और बैठकों में भाग लिया तथा उनका नेतृत्व किया।

4. प्रों सिंह ने 1966–67 में बिहार में पड़े अकाल के दौरान जे. पी द्वारा गठित बिहार राहत समिति के तहत राहत कार्य में बढ़–चढ़कर भाग लिया। बिहार में, विशेष रूप से भागलपुर में जब कभी स्थिति बिगड़ी तो वह वहां शांति और साम्प्रदायिक सद्भाव कायम करने में सदैव सक्रिय रहे। वह सामाजिक बदलाव के लिए 1974 में जे. पी. आंदोलन से गहन रूप से जुड़ गए तथा आपातकाल के विरुद्ध प्रदर्शन किए। उनको मीसा (एमआईएसए) के अंतर्गत गिरफ्तार करके 17 महीनों तक भागलपुर और हजारीबाग की जेलों में रखा गया। बाद में भी उन्होंने सक्रिय रूप से काम किया और भागलपुर जेल में कैदियों के अंधे होने के मामले को भारत के उच्चतम न्यायालय में उठाया।

5. प्रो. सिंह अफ्रो–एशियन फिलोस्फीकल एसोसिएशन के महा सचिव, ऑल इंडिया फिलोस्फी एसोसिएशन के अध्यक्ष रहे तथा जब शिक्षक आंदोलन के दौरान उनको एक माह की जेल हुई तो वह इस दौरान सर्व सेवा संघ, सेवाग्राम, सर्वोदय मंडल, हरिजन सेवक संघ, शांति सेना, आचार्य कुल, फेडरेशन ऑफ यूनिवर्सिटी सर्विस टीचर्स एसोसिएशन से विभिन्न रूपों में जुड़े रहे।

6. प्रो. सिंह को उनकी शैक्षिक उपलब्धियों के लिए अनेक सरकारी और गैर–सरकारी संगठनों तथा संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया गया है। आपको गुरु गोविन्द सिंह यूनिवर्सिटी, हरियाणा द्वारा डी. लिट की मानद उपाधि तथा इंडियन काउंसिल ऑफ फिलोसोफिकल रिसर्च द्वारा लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड प्रदान किया गया। वह जे. एन. यू. में विजिटर्स (भारत के राष्ट्रपति) नोमिनी तथा यूजीसी के मानद प्रोफ्रेसर भी रहे। उनको गरीबों, दलितों और महिलाओं के हित के प्रति उनके उत्कट समर्पण तथा स्वतंत्रता आंदोलन और लोकतंत्र के मूल्यों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता के लिए प्रधान मंत्री सहित अनेक संस्थाओं और सरकारी संगठनों द्वारा भी सम्मानित किया गया था। वह महात्मा गांधी के सच्चे अनुयायी हैं और मन, वचन और कर्म तीनों से गांधीजी के आदर्शों पर चलने के लिए अपने पूरे सामर्थ्य के अनुसार अथक रूप से काम करते हैं।